Str. 468, 43. Calc. Ausg. und E. प्रतिस्थाय: 1 — 45. Schol. गुरकीली

Str. 469, 46. Calc. Ausg. und D. हर्दे। Schol. हर्दनं हर्दिः स्त्री-क्तीवलिङ्गः। तत्र। — 47. Calc. Ausg. und D. गुल्मे।

Str 470, 50. Calc. Ausg. कुरुएडप्र, Schol. कुत्सितं र्मते ज्नेन कुरुएड: 1 — 52. Schol. मेक्रा जिप ।

Str. 471, 53. Calc. Ausg. म्रनाह्मत निबन्धः । die Scholien wie wir. — 54, 55. Der Schöliast trennt diese beiden Wörter, obgleich der Text keine Veranlassung dazu giebt, und erklärt sie folgendermassen: संग्रह्मणीनामैकम् गृह्माति ग्रह्मणी ताठशाग्निः। तस्यीयल्यादुग्रेगः। मरोडानामैकम् मृत्यवक्षां प्रवाक्तिका। — 56. Schol. भगंदरः स्पिकसंधी पिरकः। म्रादिशब्दादर्बुदादयः।

Str. 472, 57. Schol. म्रायुर्वेदको प्रि। — 58. Calc. Ausg. रागन्हा-र्यदङ्कारो।

Str. 473, 62. Calc. Ausg. und D. उपचारापचार्या, die Scholien wie wir.

Str. 474, 65. Calc. Ausg. und D. स्वास्थ्यं, die Scholien wie wir. — 66. Calc. Ausg. und D. सङ्ग्रिंग्य, Schol. सङ्ग्रते सङ्ग्रम् सिकतकीति य: 1 — 67. Calc. Ausg. und D. कुल्याम्, Schol. कलयत्याराग्यं कल्यः । Str. 475, 69. Schol. यद्मान्: (III. 27.) ।

म्राच्हाय चार्क्यिवा च श्रुतिशोलवते स्वयम् । म्राङ्क्य दानं कन्याया ब्राह्मा धर्मः प्रकोत्तिः ।

Str. 477, 75. Calc. Ausg. und D. ऽग्निमानधी: 1 Schol. म्रस्तीत्य-व्ययं धनार्थे । म्रस्ति धनमस्यास्ति म्रस्तिमान् धनमस्यास्ति धनी ।

Str. 478, 81. Calc. Ausg. म्राभ्यागारिका, die Scholien wie wir. Str. 479, 82. Die Scholien: म्रायुष्मानिष ।